सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला: जीवन परिचय

सन् १८९६ : वसंत पंचमी को पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जनपदान्तर्गत महिषादल में एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में जन्म। पिता पं० रामसहाय त्रिपाठी मूलत: उन्नाव (उत्तर प्रदेश) जिले के गढ़ाकोला ग्रमा के निवासी।

महिषादल राज्य में एक सिपाही के रूप में जीविका आरंभ कर निष्ठा एवं ईमानदारी के बल पर राज्य कोष के संरक्षक पद तक पिता की पदोन्नति। माता द्वारा सूर्य-व्रत रखने के कारण नवजात शिशु का नाम सूर्यकुमार।

सन् १८९९ : मातृ-वियोग। महिषादल के राजा द्वारा बालक के लालन-पालन हेतु एक धाय की नियुक्ति।

सन् १९०१ : घर पर ही आरंभिक शिक्षा के उपरांत बंगला पाठशाला में शिक्षा हेतु प्रवेश।

सन् १९०४ : पैतृक गाँव गढ़ाकोला, जिला उन्नाव (उ० प्र०) में यज्ञोपवीत संस्कार।

सन् १९०७ : महिषादल के हाईस्कूल में प्रवेश।

सन् १९११ : डलमऊ (रायबरेली) के पं० रामदयाल द्विवेदी की सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित कन्या मनोहरा देवी से विवाह।

सन् १९१३ : पत्नी से प्रेरणा पाकर हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्यन की ओर प्रवृत्त।

सन् १९१४ : पुत्र रामकृष्ण का जन्म। स्कूली शिक्षा अंत। नवीं कक्षा तक ही शिक्षा। संगीत, घुड़दौड़, तैराकी और कुश्ती में विशेष रुचि। रामचरित मानस के प्रति आरंभ से ही विशेष अनुराग।

सन् १९१५ : महिषादल राजबाड़ी कचहरी में नौकरी का प्रारंभ।

सन् १९१६ : प्रसिद्ध कविता 'जुही की कली' की रचना।

सन् १९१७ : कन्या सरोज का जन्म।

सन् १९१८ : विधिवत संगीत-शिक्ष का अभ्यास। पत्नी का देहांत। इसी वर्ष महामारी के प्रकोप में परिवार के पाँच सदस्यों की मृत्यु। वृहत्तर परिवार के पोषण का भार कंधों पर।

सन् १९१९ : स्वामी प्रेमानन्द से भेंट। अध्यात्म के प्रति रुचि जागृत।

सन् १९२० : साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ। पं० महावीर प्रसार द्विवेदी से पत्र-व्यवहार। नया नामकरण–सूर्यकान्त त्रिपाठी। जून १९२० में 'प्रभा' में प्रथम काव्य-रचना तथा दिसम्बर १९२० में 'सरस्वती' में प्रथम गद्य-लेख 'बंगभाषा का उच्चारण' प्रकाशित।

सन् १९२१ : महिषादल राज्य की नौकरी से त्यागपत्र। अपने पैतृक ग्राम गढ़ाकोला आगमन। दौलतपुर में पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्रथम साक्षात्कार। उन्हीं की प्रेरणा से साहित्य-सेवा में पूर्णतया समर्पित। बेकारी से पीड़ित हो पुन: महिषादल राज की नौकरी।

Scanned by TapScanner

सन् १९२२ : रामकृष्ण मिशन के पत्र 'समन्वय' से सम्पर्क। 'समन्वय' में 'भारत में श्री रामकृष्णावतार' लेख प्रकाशित। महिषादल राज की नौकरी से इस्तीफा। 'समन्वय' का संपादन। 'श्री रामकृष्ण वचनामृत' का हिन्दी अनुवाद।

सन् १९२३ : 'अनामिका' संग्रह का कलकत्ता से प्रकाशन। 'निराला' उपनाम से 'मतवाला' में प्रथम रचना प्रकाशित। 'समन्वय' छोड़ कर 'मतवाला' के सम्पादकीय विभाग में शामिल। राष्ट्रीय कार्यों में रुचि।

सन् १९२४ : हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के दिल्ली अधिवेशन में शामिल।

सन् १९२५ : 'मतवाला' से संबंध-विच्छेद। कलकत्ता में संघर्षपूर्ण जीवन। चार आने पृष्ठ पर बंगला से हिन्दी में अनुवाद, दवाइयों के विज्ञापन और विवाहादि के लिए पद्य-रचना के पारिश्रमिक से जीवन-यापन।

सन् १९२६ : 'मतवाला-परिवार' में पुन: शामिल। गाँधीजी के विपक्ष में लिखे गए रवीन्द्रनाथ के 'चरखा' लेख का विरोध।

सन् १९२७ : 'मतवाला' से पुन: विछोह। आर्थिक संकट के कारण २५० रु० पर पुस्तक भंडार, लहेरियासहाय के लिए 'रस-अलंकार' लिखा, पापुलर ट्रेडिंग कम्पनी के लिए बाल-साहित्य और प्रकाशक निहालचन्द वर्मा के लिए चार आने पृष्ठ पर रवीन्द्र काव्य पर आलोचना पुस्तक का लेखन। काशी यात्रा में प्रसाद जी से भेंट। 'पन्त और पल्लव' की रचना।

सन् १९२८ : श्री गुलाबराय के निमंत्रण पर छतरपुर की यात्रा। तीन सप्ताह बाद वापसी। गढ़ाकोला में बसे। गद्य-कृतियों का सृजन।

सन् १९२९ : पुन: कलकत्ता। कलकत्ता में बिना नौकरी के स्वतंत्र रह कर नाटक, प्रहसन आदि का लेखन। काम न चलने पर गढ़ाकोला वापस।

सन् १९३० : सरोज का विवाह। 'परिमल' का प्रकाशन। लखनऊ से प्रकाशित 'सुधा' के सम्पादकीय विभाग में शामिल।

सन् १९३१ : प्रथम उपन्यास 'अप्सरा' का प्रकाशन। साहित्य-सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन में सम्मिलित।

सन् १९३२ : कलकत्ता से प्रकाशित पत्र 'रंगीला' का सम्पादन। तीन अंकों के बाद ही लखनऊ वापस। पुन: 'सुधा' से जुड़ाव।

सन् १९३३ : 'अलका', 'लिली' प्रकाशित। 'तुलसीदास' की रचना।

सन् १९३४ : 'प्रबन्ध-पद्म' प्रकाशित।

सन् १९३५ : सरोज की मृत्यु। 'प्रभावती' प्रकाशित।

सन् १९३६ : 'निरुपमा', 'गीतिका' का प्रकाशन। लखनऊ में गाँधीजी से हिन्दी के सम्बन्ध में बातचीत। काशी में रहे। 'राम की शक्ति-पूजा' की रचना। इलाहाबाद में प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन में भागीदारी।

Scanned by TapScanner

सन् १९३७ : 'अनामिका' (नवीन) प्रकाशित। कलकत्ता में सम्मान-समारोह आयोजित। फैजाबाद प्रान्तीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन में राजनीतिक नेताओं से झड़प।

सन् १९३९ : साहित्य-सम्मेलन के काशी अधिवेशन में साहित्य-परिषद् के अध्यक्ष। बाँदा और मेरठ में सम्मान-समारोह।

सन् १९४० : 'प्रबन्ध-प्रतिमा' का प्रकाशन।

सन् १९४१ : अबोहर साहित्य-सम्मेलन में शामिल। 'सुकुल की बीबी' प्रकाशित।

सन् १९४२ : छपरा और मुज़फ्फरपुर में सम्मान। 'बिल्लेसुर बकरिहा', 'कुकुरमुत्ता' प्रकाशित।

सन् १९४३ : मलेरिया से पीड़ित हो इलाहाबाद में रहे और वहीं बस गए। बंकिमचन्द्र के उपन्यासों का अनुवाद किया। 'अणिमा' प्रकाशित। 'वेला' का प्रकाशन।

सन् १९४६ : 'अपरा' और 'नए पत्ते' प्रकाशित।

सन् १९४७ : काशी में 'निराला-स्वर्ण-जयन्ती' का आयोजन।

सन् १९४८ : 'देवी' का प्रकाशन।

सन् १९५० : 'अर्चना' और 'काले कारनामे' प्रकाशित।

सन् १९५३ : कलकत्ता में अभिनन्दन। 'अर्चना' को उत्तर-प्रदेश-सरकार का पुरस्कार मिला। राजकीय आर्थिक सहायता मिली।

सन् १९५४ : 'अपरा' पर (२१००) का पुरस्कार। 'गीत-गुंज' का प्रकाशन।

सन् १९५७ : 'चयन' का प्रकाशन।

सन् १९६१ : लम्बी बीमारी के बाद १५ अक्टूबर को प्रातः ९ बजकर २३ मिनट पर महाप्रयाण।

Scanned by TapScanner

काव्य-कृतियाँ

१. अनामिका (प्राचीन) १९२३
२. परिमल १९३०
३. गीतिका १९३६
४. अनामिका (नवीन) १९३७
५. तुलसीदास १९३८
६. कुकुरमुत्ता १९४२
७. अणिमा १९४३
८. बेला १९४३
९. नए पत्ते १९४६
१०. अपरा (संचयन) १९४६
११. अर्चना १९५०
१२. आराधना १९५३
१३. गीत-गुंज १९५४
१४. सांध्य-काकली १९६९

रेखाचित्र स्फुट गद्य साहित्य

१. कुल्ली भाट १९३९
२. बिल्लेसुर बकरिहा १९४२

निबंध संग्रह अनूदित रचनाएँ

१. प्रबन्ध पद्म १९३४
२. प्रबन्ध प्रतिमा १९४०
३. चयन १९५७
४. चाबुक १९६२
५. संग्रह १९६४

आलोचनात्मक कृतियाँ

१. रवीन्द्र कविता-कानन १९२४
२. पन्त और पल्लव १९४९

जीवन साहित्य

१. भक्त ध्रुव १९२६
२. भीष्म १९२६
३. महाराणा प्रताप १९२९
४. भक्त प्रह्लाद १९३०

कहानी-संग्रह

१. लिली १९३३
२. सखी १९३५
३. सुकुल की बीबी १९४१
४. चतुरी चमार १९४५
५. देवी १९४८

उपन्यास

१. अप्सरा १९३१
२. अलका १९३३
३. प्रभावती १९३५
४. निरुपमा १९३६
५. चमेली (अपूर्ण) १९३९
६. चोटी की पकड़ १९४६
७. काले कारनामे १९५०
८. इन्दुलेखा (अपूर्ण) १९६०

१. महाभारत १९३९
२. रामायण की अंतर्कथाएँ १९६८
३. निराला का पत्र-साहित्य

अनुवाद

१. आनन्द मठ
२. विष वृक्ष
३. कृष्णकान्त का विल
४. कपाल कुण्डला
५. दुर्गेशनन्दिनी
६. राजसिंह
७. राज रानी
८. देवी चौधरानी
९. युगलांगुलीय
१०. चन्द्रशेखर
११. रजनी
१२. श्री रामकृष्ण वचनामृत
१३. भारत में विवेकानन्द
१४. परिव्राजक
१५. राजयोग

Scanned by TapScanner

निराला के साहित्य में व्यक्तित्व का प्रतिबिम्बन

-प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह

छायावादी कवि चतुष्टय 'प्रसाद-पन्त-निराला-महादेवी' के साहित्य के स्वर्णिम स्तम्भ पर छायावाद का भव्य भवन निर्मित हुआ है। इन कवियों की अपनी -अपनी इयत्ता और महत्ता है। प्रसाद में समुद्र सी गम्भीरता, स्थविर सी भावमुद्रा, इतिहास-दर्शन-पुराण प्रसंगों का विभिन्न साहित्य रूपों में निर्वचन के साथ भारत के गौरवशाली अतीत में तल्लीनता दिखती है। पंत में किसलय सी कोमलता, पुष्प-परागण सी मृसणता, पर्वत की मरकतमयी शैलमालाओं से लेकर ग्राम्यश्री की स्वर्णधूलि तक और करुणामूर्ति महादेवी में भाव की विह्वलता, प्रेम में अटूट समर्पण, प्रियतम की अनवरत प्रतीक्षा में अकम्पदीप की ज्योति के दर्शन मिलते हैं। इन सबसे भिन्न और विशिष्ट हैं निराला। 'जागो फिर एक बार ' में निराला ने गुरुगोविन्द सिंह के व्यक्तित्व की तुलना शिव से की है - वैसी ही जटाएं, और भाल अनल धक-धक कर जला ' कहना न होगा कि जिस प्रकार उक्त कविता में गुरुगोविन्द की तुलना शिव से की गई है उसी प्रकार निराला की तुलना गुरुगोविन्द से की जा सकती है। अपने समय में सवा-सवा लाख पर वे भारी थे, तमाम सम्पादक, आलोचक निराला पर वार पर वार कर रहे थे और वे उनका अपनी धारदार लेखनी से प्रत्युत्तर दे रहे थे। आलोचक रामविलास शार्म ने अपनी 'कवि' शीर्षक कविता में जो चित्र खींचा है वह निराला पर चरितार्थ होता है -

वह सहज विलंबित मंथर गति जिसको निहार
गजराज लाज से राह छोड़ दे एक बार,
काले लहराते बाल देव सा तन विशाल,
आर्यों का गर्वोन्नत, प्रशस्त, अविनीत भाल।

इसी प्रकार 'राम की शक्तिपूजा' में युद्ध में लड़ते हुए राम - 'विद्वांग बद्ध कोदंड मुष्टि खर रूधिर स्राव' यानि कि लहूलुहान हो जाते हैं और क्लांत- श्रांत हो जाने पर - 'दृढ़ जटा मुकुट विपर्यस्त प्रतिलट से खुल' यहाँ नायक की भांति कवि निराला अपने जीवन संग्राम में युद्धरत दिखायी देते हैं, 'दुर्गम पर्वत पर नैशांधकार ' सामाजिक अन्याय रूपी अंधकार बढ़ता जा रहा है जिसे दुर्गम पर्वत की तरह अपने

Scanned by TapScanner

शरीर पर कवि और नायक ने एक साथ झेला। 'सरोज स्मृति' में निराला का आत्मकथ्य व्यंजित हुआ है - निराला संपादकगणों के व्यंग्य वाणों को एक योद्धा की तरह 'वह शरक्षेप वह रणकौशल' का सामना करते हुए अपराजेय बने रहे - 'एक और मन रहा राम का जो न थका' निराला ने हार नहीं मानी। उलटा बड़े-बड़ों से रार कर लिया। उनके इस दुर्धर्ष, क्रांतिकारी और विद्रोही व्यक्तित्व पर समशेर की रचना याद आती है - 'काल तुझसे होड़ है मेरी।' निराला के व्यक्तित्व को अनेक रूपों में उपमित किया गया है। उन्हें किसी नें 'ही मैन', किसी ने 'अपोलो' और किसी ने 'आधुनिक विवेकानन्द' से उपमा दी है। निराला में कबीर सा विद्रोह, कालिदास सी सौंदर्यदृष्टि, टैगोर की भांति मानवतावाद, और गालिब की तरह मस्ती समाहित है। लखनऊ विश्वविद्यालय में रिसर्च करते हुए दिनों में रामविलास शर्मा ने निराला के व्यक्तित्व को अपनी तरह से आंका है - "तुलसीदास की करूणा का पता निराला के आर्द्रकण्ठ से लगा। रवीन्द्रनाथ से सौंदर्यस्वप्न उनकी आँखों में जगमगाते हुए दिखाई पड़े। शेक्सपियर की सार्वजनीनता 'खिंच गये दृगो' में सीता के राममय नयन' में प्रतिध्वनित हुई। कालिदास की 'तन्व श्याम शिखरदशना' कवि को अतीत के स्वप्नों में विभोर कर देती थी, और फटेहाल निराला के जीवन में गालिब की तलखी उसका दर्द और आत्मविश्वास चरितार्थ होता था जब वह कहते थे - 'हम सुखन फहम हैं गालिब के तरफदार नहीं' या 'कर्ज की पीते थे मैं लेकिन समझते थे कि हाँ, रंग लायेगी हमारी फ़ाकामस्ती एक दिन।"

निराला का कृती व्यक्तित्व उनके साहित्य में प्रतिबिम्बित है। व्यक्तित्व की विलक्षणता और विविधता के कारण वे विषय -वैविध्य के कवि कहे गए। पंत और महादेवी में जहाँ समानाभास है वहाँ निराला के काव्य में पदे-पदे विराधाभास है। निराला का जीवन विरोधी ताने -बाने से बुना है। सहजता- भावुकता- विह्वलता- व्यग्रता - ओज और पौरुषता, दृढ़ता के अनेक संदर्भ निराला पर लिखे गए अभिनन्दनग्रंथ और अन्य लेखो में वर्णित है। उदाहरणस्वरूप - लखनऊ में गोमती के तट पर घूमते हुए अथवा कि गर्मियो में आम की ढेरी के पास भाव -ताव करते चक्कर काटते हुए अथवा दारागंज की गली में रहते खिचड़ी बनाते खाते, अंतिम दाने को चुन लेने की इच्छा से पात्र में उंगलियो के निशान पड़ जाते थे और प्रायः कमर तक वस्त्र पहने, खुले वक्षस्थल घूमा करते थे और जब वे अपनी ससुराल डलमऊ जाते तो रूह की मालिश किए बिना उनकी दिनचर्या शुरू न होती। इसी

Scanned by TapScanner

प्रकार गांधी से मिलना हो अथवा कवि सम्मेलनों में जाना हो तो पूरी सज-धज के साथ, जीवन का यह प्रक्षेप साहित्य में बराबर फलित हुआ। वे अव्यवस्थित नहीं जैसे मुक्त छंद और व्यवस्थित इतने जैसे मात्रिक छंद। निराला सामान्य जन के लिए जितना सुलभ थे उतना ही अपने को विशिष्ट लगाते वालों के लिए दुर्लभ। निराला 'चतुरी चमार' और 'विल्लेसुर बकरिहा' को अपनी अनन्यता प्रदान करते है और यही नहीं समग्र साहित्य में आम आदमी के साथ खड़े हैं। 'नये पत्ते' में 'डिप्टी साहब आये' कविता में जमींदार के गोड़ को बदलू अहीर एक घूँसा मारता है। जमींदार के गोड़ को मारना एक गंभीर अभियोग था, जबकि पुलिस दरोगा भी डिप्टी साहब के साथ मौजूद थे, लेकिन क्षणमात्र में बदलू के तरफदार मन्नी कुम्हार, कुल्ली तेली, भकुआ चमार, लच्छू नाई, बली कहार सब टूट पड़े और 'कुछ नहीं हुआ - कुछ नहीं हुआ ' होने लगा । सारा गाँव एक हो गया।'

'अलका', 'निरुपमा', 'चोटी की पकड़' में निराला उस ओर आम जन के साथ खड़े है, दूसरी ओर गांधी और नेहरू के अनेक विचारों को आड़े हाथों लिया है। जिस प्रकार मैथिलीशरणगुप्त और राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन कांग्रेसी रूझान रखते हुए लोकप्रिय बने थे वैसा निराला को पसंद न था, वे अभाव में विरोध करते रहे। निराला के मूर्धन्य विशेषज्ञ प्रोफेसर सूर्य प्रसाद दीक्षित ने लिखा है - 'यह ज्ञातव्य है कि उनके विरोधियों में अनेक साहित्यकार, संपादक, समीक्षक और जनप्रतिनिधि सम्मिलित थे, जैसे- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'नवीन', लाला भगवानदीन, पदमसिंह शर्मा, सनेही, हितैषी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पर, निराला ने नहले पर दहला भरकस दिया है। कही -वही विवाद को टाल भी दिया है, यह कहते हुए कि जाइये, मैं मच्छर नहीं मारता। प्रो. दीक्षित जी का मानना है कि निराला का विरोध परिस्थितिवश विरोध है। हिन्दी में टैगोर की पहली -पहली समीक्षा - रवीन्द्र कविता -कानन' नाम से निराला जी ने लिखी थी, किन्तु आगे चलकर रवीन्द्रनाथ को आदर्श न मानकर वे उनके प्रतिद्वन्द्वी बन गए। उन्हे लगा की प्रिंस द्वारकानाथ के नाती और अंग्रेज/ अंग्रेजी परस्त होने के कारण वे नोबुल प्राइज' से नवाजे गए है। एक जगह वे परस्पर तुलना करते हुए कहते है कि रवीन्द्र जमीन से जुडे हुए नहीं है। निराला के शब्दों में मुझे सत्य दिखा, किंतु स्थिति-भेद है। हजरत मूसा को पहाड पर दिखा था, रवीन्द्रनाथ को आराम कुर्सी पर और मुझे गांव के गलियारे में। जब गुरुदेव की

Scanned by TapScanner

जयजयकार ज्यादा होने लगी तो निराला ने कभी तुलसी को कभी बिहारी को उनके मुकाबले खड़ा कर दिया। कालांतर में वे स्वयं उन्हें चुनौती दे बैठे। 'गांधी जी से बातचीत' के बीच वे कहते हैं कि आप दोनों की चुनी हुई रचनाएं सुनकर बताइए कि कौन बेहतर है ? यही नहीं, एक प्रसंग में वे रवीन्द्रनाथ का विरोध करते हुए गांधी की खादी (चरखा) आंदोलन तक का समर्थन कर डालते है।'' इस प्रकार के अन्तर्विरोध अनेक हैं।

उल्लेखनीय है कि निराला का कवि व्यक्तित्व जनवादी संस्कारों से निर्मित है और कथा उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण आदि में बराबर आम आदमी के ही पक्षकार है। उनके प्रगतिवादी स्वर की आलोचकों ने प्रमुखता भी दी है किंतु अन्तर्विरोध यह भी है कि जिन सामाजिक समस्याओं का समाधान धरना - प्रदर्शन, नारा, आंदोलन आदि से नहीं हुआ या हो सका उनके लिए आध्यात्मिक शक्ति का आह्वान करते हैं। यह कदाचित वंगीय पृष्ठभूमि से जुड़े होने के कारण अथवा छायावादी संस्कार के कारण है -

एक बार बस और नाच श्यामा
कितने ही है असुर चाहिए कितनी तुझको हार
सामान सभी तैयार, कर मेखला मुंड मालाओं की बन-ठन अभिरामा।

दलितों के उद्धार के लिए एक समाधान 'डिप्टी साहब' वाली कविता की तरह है और इस प्रकार के स्वर 'नये पत्ते', 'बेला', 'कुकुरमुत्ता', 'झींगुर डटकर बोला' आदि में है ।किंतु समाधान खोजने का एक मार्ग यह भी है - परासत्ता पर अटूट आस्था और विश्वास, उनकी प्रार्थना और अभ्यर्थना में आम जन की सर्वमंगल कामना रहती है -

दलित जन पर करो करूणा,
दीनता पर उतर आए प्रभु तुम्हारी शक्ति अरुणा।''

छायावादी कवियों में प्रसाद के काव्य में शैव दर्शन, पंत में अरविंद की अन्तश्चेतना और महादेवी में बौद्ध के करुणावाद के प्रति रूझान हैं, कहाना न होगा की इन रचनाकारों में जो दार्शनिक विशेषताएँ- अलग अलग विद्यमान है वे निराला में एक साथ सिमट आयी है। निराला की दार्शनिक पृष्ठभूमि प्रौढ़ और गंभीर है। राम की शक्ति पूजा में लिखा है कि -'युग अस्ति नास्ति के एक रूप गुण गण अनिन्द्य'

Scanned by TapScanner

अथवा राम द्वारा शिव की उपासना, शैव-वैष्णव-शाक्त, निर्गुण और सगुण का मानों समन्वय कर रहे हो। वे प्रार्थना गीतों में अन्तश्चेतना की भूमि को स्पर्श करते हैं और 'भगवान बुद्ध के प्रति कविता' में बौद्ध धर्म का प्रतिपादन करते हैं। निराला की 'तुम और मैं' 'पास हीरे -हीरे की खान', अधिवास आदि कविताओं से उनके अध्यात्म चिन्तन का परिचय मिलता है। वे अद्वैतवादी विवेकानंदी दर्शन से प्रभावित है। दरीद्रनारायण की सेवा को निराला मनुष्य का वास्तविक धर्म मानते हैं। वे ईश्वर में आस्था रखते हैं किन्तु कोरे भाग्यवादी नहीं है। निराला पौरुष और पुरुषार्थ को जीते हैं 'कर्मवाद से जुडी ये पंक्तियाँ सार्थक है' -

कर्म का कार्मुक कर में धार
बनेगी कृष्ण सिद्धि महान।

इसी तरह पुरुषार्थ को लक्षित करते हुए लिखा है -

योग्य जन जीता है
पश्चिम की उक्ति नहीं
गीता है गीता है, स्मरण करो बार -बार।

निराला जीवन भर अभावग्रस्त रहे और सार्थक पिता न बन पाने की बराबर उनमें कशिश थी -अपनी पुत्री सरोज को न चिनांशुक पहना सके और न दधिमुख रख सके -इसके पीछे उनका न हत पौरुष था न क्षीण पुरुषार्थ, अपने युगीन अन्य रचनाकारों की तरह वे समझौता परस्त न थे और न व्यवसायिक लेखक। वे किसी दूसरे के भरण-पोषण सम्बन्धी हक को छीन कर अथवा ऐसे किसी प्रकार के अनुचित उद्योग से अपने उपयोग में जुटाई गयी धनराशि ग्राह्य न थी। यद्यपि अर्थोपार्जन के उपाय अन्य की भांति उन्हें भी मालूम थे -

जाना तो अर्थागमोपाय
पर रहा सदा संकुचित काय।

अभावग्रस्त जीवन जीने की सफाई में लिखा है कि -

'क्षीण का न छीना कभी अन्न, लख न सका वे दृग विपन्न।'

अथवा 'अधिवास' शीर्षक कविता में वे चेतना की उच्चावस्था की ओर ऊर्ध्व संचरण तो करते हैं। किन्तु अपने यथार्थ के धरातल पर आम जन को गले लगाने से नहीं भूलते। सच्चे अर्थों में निराला मानवतावादी है, 'जैसा तू दिख वैसा तू लिख' में विश्वास करते हुए मानवतावाद को जिया और उसी को लिखा है -

Scanned by TapScanner

देखा एक दुखी निज भाई
दु:ख की छाया पड़ी हृदय में मेरे
झट उमड़ वेदना आयी।
लगाया उसे गले से हाय।
..... छूटता है यद्यपि अधिवास,
नहीं पर इसका मुझको त्रास
मैंने मैं शैली अपनाई''

डॉ. धनन्जय वर्मा के शब्दों में -" निराला के काव्य में बौद्धिकता आरोपित अथवा सायास नहीं है, यह बौद्धिक और दार्शनिक उन्हीं अर्थों में हैं, जिन अर्थों में उनका व्यक्तित्व है। बौद्धिक काव्य और काव्य की बौद्धिकता में अन्तर होता है। बौद्धिक काव्य में बुद्धि ही काव्य को आच्छादित करती है। काव्य की बौद्धिकता में कवि का चिन्तन और दर्शन भी अभिव्यक्त होता है ।"

इस प्रकार उनके साहित्य में व्यक्तित्व की अनेक छवियों का प्रतिबिम्बन मिलता है। उन्हीं के शब्दों में -**और भी फलित होगी छवि।**

Scanned by TapScanner

निराला का काव्य आरंभ से अंत तक पौरुष का काव्य है। यह पौरुष देश-काल, भाव और रस के अनुकूल बदलती हुई श्रृंगार सज्जा के साथ प्रस्फुटित हुआ है। छायावाद की नौका का यह कर्णधार सुकुमार होने के साथ -साथ कठोर भी था। बहुमुखी प्रतिभा के धनी महाप्राण निराला का काव्य अपनी विविधता में भी एकता समेटे हुए अपनी एकाग्रता में निराली छटा दिखा रहा था। उनके काव्य को चार सोपानों में बाँटा जा सकता है।

1. 'रहस्यवादी कविताएँ, 2. छायावादी कविताएँ, 3. प्रगतिवादी कविताएँ, 4. प्रयोगवादी कविताएँ ।

निराला का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा। बचपन में माता का देहावसान, महामारी में पत्नी मनोहरा देवी, पिता, चाचा आदि एक के पश्चात् एक के स्वर्ग सिधारने से भतीजे और दो संतानों का बोझ उन्हें अपने ऊपर उठाना पड़ा। वे नौकरी के लिए यहाँ-वहाँ भटकते रहे और और निराश हो उठे, अपने आत्म सम्मान की परिरक्षा के लिए उन्हें महिषादक की नौकरी छोड़नी पड़ी। 'सरस्वती' से लेख वापस आते थे। तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ, जर्मनी की लड़ाई एवं असहयोग आंदोलन आदि को ध्यान में रखकर निराला ने ग्रामीण जनता को स्वदेशी का महत्व समझाते हुए जून 1920 में (प्रभा मासिक पत्रिका में) वसंत की भूमि पर एक देशभक्ति का गीत लिखा -

'बन्दू में अमल, कमल,
चिर सेवित चरण युगल,
शोभामय शांति नित्य पाप ताप हारी।
मुक्त बंध , घनानंद मुद मंगलकारी।''

Scanned by TapScanner